Date __/__/____ Page No.: ____

उग्रवादियों के राजनीतिक विचार और उद्देश्य -

उग्र-राष्ट्रवादियों की राजनीतिक विचारधारा उदारवादि से भिन्न और कुछ अंशों में विपरीत थी। उन्हें उदारवादि की भाँति अंग्रेजों की न्यायप्रियता और संवैधानिक तरीकों में कोई विश्वास न था वे भारत और ब्रिटेन के हितों को एक-दूसरे के पूरक न मानकर नितान्त विरोधी मानते थे। इन लोगों का मत था कि ब्रिटिश साम्राज्य के साथ कितना भी सहयोग क्यों न किया जाये उसके द्वारा भारत अपने राजनीतिक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकता।

उग्रवादियों ~~का मत~~ ने पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति अपना उद्देश्य घोषित किया। तिलक के अनुसार स्वरा का अर्थ था कि भारत केवल नाममात्र के लिए ब्रिटिश ताज के अधिन रहें। आन्तरिक और विदेश विषयों में उसे पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो। उनका विश्वास था कि सरकारी कार्यों में थोड़ा-बहुत हाथ बँटाने से देश का कल्याण नहीं हो सकता है। इस प्रकार उग्रवादियों की राजनीतिक विचारध उदारवादियों से भिन्न थी।

उग्रवादियों के साधन (कार्य-पद्धति) -

उग्रवादी अपने लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य को प्र करने के लिए हिंसा और आतंक की नीति में विश्वास नहीं करते थे, वे अहिंसात्मक साधनों द्वारा उसे प्राप्त करना चाहते थे। इस तरह उग्रवादियों की राजनीतिक विचारधारा और उद्देश्य तो उदारव से भिन्न ही थे परन्तु उनकी कार्य-पद्धति और साधन भी उदार के नितान्त विपरीत और सर्वथा भिन्न थे। तिलक ने कहा था कि अपने उद्देश्य के कारण नहीं परन्तु उसे प्राप्त करने के उपयो कारण हमें उग्रवादियों की उपाधि मिली है"। उग्रवादियों के प्रमुख साधन निम्नलिखित थे-

1. बहिष्कार -
2. स्वदेशी -
3. निष्क्रीय प्रतिरोध -
4. राष्ट्रीय शिक्षा -

मीरा ममोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान